

**साष्टांग प्रणाम** पुं. (तत्.) सिर, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन, और मन इन आठ अंगों सहित भूमि पर लंबवत् लेटकर किया जाने वाला प्रणाम।

**सास स्त्री.** (तद्.) 1. मानवीय संबंध के अनुसार किसी की पत्नी या पति की माता 2. उसी संबंध या रिश्ते में लगने वाली कोई स्त्री जैसे- चचिया सास, ममिया सास 3. नाथ व सिद्ध संप्रदाय के अनुसार मणिपुर चक्र में स्थित अपान वायु जो मोह, माया और वासना आदि की जननी मानी गई है।

**सासण** पुं. (तद्.) दे. शासन।

**सासत स्त्री.** (देश.) 1. साँसत 2. साँस घुटने की तरह का कष्ट 3. बहुत ज्यादा शारीरिक पीड़ा 4. व्यर्थ का झंझट, बखेड़ा 5. फजीहत।

**सासति स्त्री.** (तद्.) 1. शास्ति, शासन 2. दंड, सजा।

**सासन** पुं. (तद्.) 1. आदेश, आज्ञा 2. अधिकार या वश में रखना 3. दंड, सजा 4. हुक्मत या सरकार 5. वह फरमान जिसके द्वारा किसी को कोई अधिकार दिया जाए 6. शास्त्र 7. इंद्रिय निग्रह 8. सुंदर आसन, उत्तम आसन के सहित 9. शासन।

**सासन लेट स्त्री.** (तत्.) एक प्रकार का सफेद जालीदार वस्त्र।

**सासनाँ स्त्री.** (तद्.) कष्ट, पीड़ा।

**सासना स.क्रि.** (तद्.) 1. शासन करना 2. अधिकार करना 3. दंड देना 4. कष्ट या पीड़ा देना।

**सासरा** पुं. (तद्.) 1. ससुराल 2. श्वसुर का घर 3. पति या पत्नी के पिता का घर।

**सासा स्त्री.** (तद्.) 1. आशंका, संदेह पुं. साँस।

**सासु वि.** (तद्.) प्राणयुक्त, जीवित स्त्री. तद्. सास।

**सासुर** पुं. (तद्.) 1. पारस्परिक संबंध की दृष्टि से पति या पत्नी का पिता 2. ससुर 3. श्वसुरालय, ससुराल।

**सास्त्र** पुं. (तद्.) 1. किसी विषय के तथ्यात्मक ज्ञान से पूर्ण ग्रंथ जैसे- वास्तुशास्त्र, सौंदर्य

शास्त्र 2. आचार, नीति आदि के नियामक ग्रंथ जैसे- धर्मशास्त्र, मनुस्मृति आदि 3. वेद, वेदांग, उपनिषद् आदि।

**सास्ना स्त्री.** (तत्.) गाय का गलकंबरु।

**सास्वादन** पुं. (तत्.) जैन मत के अनुसार निर्वाण प्राप्ति की चौदह अवस्थाओं में से दूसरी अवस्था।

**सास्मित** पुं. (तत्.) शुद्ध सत्त्वभाव से युक्त की जाने वाली भावना।

**साह** पुं. (तद्.) 1. सज्जन व्यक्ति 2. साहूकार, महाजन 3. एक पर्वतीय हिंसक जंतु जिसके शरीर पर चीते की तरह की चित्तियाँ होती हैं 4. लकड़ी या पत्थर का लंबा टुकड़ा जो घर की देहलीज के ऊपर दोनों पार्श्वों में लगा रहता है स्त्री. बाँह पुं. (फा.) शाह, बादशाह।

**साहचर्य** पुं. (तत्.) 1. सहचर होने की अवस्था या भाव 2. साथ-साथ रहने का भाव।

**साहचर्यात्मक वि.** (तत्.) 1. जो साहचर्य युक्त हो, साहचर्यवाला 2. जो साहचर्य की भावना से युक्त हो।

**साहजिक वि.** (तत्.) 1. जो मानवोचित सहज क्रियाकलापों से युक्त हो 2. जो प्राणी की सहज वृद्धि या प्रेरणा से संपन्न हो 3. स्वाभाविक।

**साहजिक धन** पुं. (तत्.) किसी प्रशंसनीय या श्रेष्ठ कार्य के संबंध में प्राप्त पुरस्कार, पारितोषिक, सम्मान, वेतन आदि से मिला हुई धनराशि।

**साहण** पुं. (तद्.) 1. साथी, सहचर 2. सेना, फौज 3. परिषद, सभा।

**साहन** पुं. (तद्.) असहज या प्रतिकूल विचार आदि के सहने की क्रिया या भाव।

**साहनहार वि.** (तद्.) सहने वाला, सहनशील।

**साहना स.क्रि.** (तद्.) (किसी कार्य) को साधना स्त्री. उपासना, साधना।

**साहनी** पुं. (तद्.) 1. सेनापति 2. मध्यकालीन भारत के एक प्रकार के राजकर्मचारी 3. संगी, साथी पुं. (अर.) हाँकना, घुड़सवार स्त्री. सेना, फौज।